an>

Title: Need to declare and develop places of historical importance and places associated with the great personalities of Bihar as world class international tourist destinations.

श्री राजेश रंजन (मधेपुरा) ः इतिहासविदों का मानना है कि बिहार के इतिहास के बिना हिन्दुस्तान के इतिहास की कल्पना नहीं की जा सकती है। यह सर्वविदित है कि महावीर बुद्ध, शंकराचार्य आदि सभी का संबंध किसी न किसी रूप में बिहार राज्य से रहा है। दुनियां के प्राचीनतम गणतंत्र वैशाली, विक्रमशिला विश्वविद्यालय आधुनिक भारत के प्रणेता महात्मा गांधी की कर्मभूमि, दूसरे स्वतंत्रता आंदोलन की संज्ञा पाए जे.पी. आंदोलन के कर्णधार जयप्रकाश नारायण, 80 वर्ष की उम्र में अंग्रेजों के छक्के छुड़ाने वाल योद्धा वीर कुँवर सिंह की जन्मस्थली, सबसे कम उम्र में अंग्रेजों के विरूद्ध लड़ते हुए हंसते-हँसते फांसी पर झूलने वाले शहरी खुदीराम बोस जैसे अनगिनत धरोहरों के बावजूद बिहार पर्यटन के मामले में आगे नहीं बढ़ रहा है। बिहार ऐसे ही अनेक महापुरूषों की जन्मस्थली एवं कर्मस्थली है जो विकास की बाट जोह रहा है। बहुत सारे स्थलों को पर्यटन स्थलों के रूप में चिन्हित भी नहीं किया गया है। कुछ स्थलों को चिन्हित किया भी गया है तो उसे सुचारू रूप से विकसित नहीं किया गया है। इस संदर्भ में मैं बिहार स्थित पर्यटन स्थलों को सदन के संज्ञान में लाना चाहता हूँ। जैसे सिंहेश्वर स्थान, मंडन मिश्र की जन्म स्थली महिषी, संत कारू खिरहर की जन्मस्थली, सूर्य मन्दिर कन्दाहा, पूरन देवी मन्दिर, मधुबनी, मुंगेर, सोनपुर, वैशाली, वाल्मीकिनगर, विक्रमशिला, जीरादेई, सीतामढ़ी, सासाराम, विसफी, पावापुरी, भागलपुर, बराबर पहाड़ी, जगदीशपुर, भिखना ठोढ़ी, भितहरवा आश्रम, सिताब दियारा, सिमरिया घाट, कुतुबपुर आदि जिन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर के पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करना आवश्यक हैं। पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने से विकास स्थल के विकास के साथ-साथ इस क्षेत्र का भी विकास होगा एवं रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे।

अतः मेरा केंद्र सरकार से अनुरोध है कि उपरोक्त महापुरूषों की जन्मस्थली, कार्यस्थलों को अंतर्राष्ट्रीय स्थल घोषित कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर के पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाए।